नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक 13.09.2018

प्रकाशनार्थ

आजादी की लड़ाई में अनगिनत नाम ऐसे है, जो इतिहास के पन्नों में आज भी गुमनाम हैं। ऐसा ही एक नाम अमर क्रान्तिकारी यतीन्द्रनाथ दास का भी है। यतीन्द्रनाथ दास का जन्म २७ अक्टूबर, १९०४ को कलकत्ता के एक साधारण बंगाली परिवार में हुआ था। इन्होंने स्नातक की शिक्षा कलकत्ता के विद्यासागर कालेज से प्राप्त किया। महज १६ साल की उम्र में ही यतीन्द्रनाथ दास देश की आजादी के आन्दोलन में कूद गये थे। भारत माता के लिए कुछ करने का जज्बा लिए यतीन्द्रनाथ, प्रसिद्व क्रान्तिकारी सचीन्द्रनाथ सान्याल तथा भगत सिंह के सम्पर्क में आये और क्रान्तिकारियों के संगठन हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिकएशन के सदस्य बन गये। 'दक्षिणेश्वर बम कांड' तथा 'काकोरी कांड' के सिलसिले में अंग्रेजों ने १९२५ में यतीन्द्रनाथ को गिरफ्तार कर लिया। हांलाकि सबूत नहीं मिने के कारण उन पर मुकदमा तो नहीं चल पाया लेकिन उन्हें नजरबन्द कर दिया गया। अपने साथ हो रहे दुर्व्यवहार के विरोध में उन्होंने भूख हड़ताल की। जब उनकी हालत बिगड़ने लगी तो अंग्रेज सरकार ने डरकर २१ दिन बाद उन्हें रिहा कर दिया। वे भगत् सिंह के साथ अंग्रेजो के खिलाफ हर संघर्ष में शामिल रहते थे। लाहौर षड़यत्र केस में यतीन्द्रनाथ दास को भगत सिंह और अन्य क्रान्तिकारियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। लाहौर जेल में यूरोपियन और भारतीय कैदियों में भेदभाव के कारण भगत सिंह ने अनिश्चित कालीन भूख हड़ताल शुरू कर दी। भगत सिंह ने यतीन्द्रनाथ से भी भूख हड़ताल में शामिल होने का अनुरोध किया। यतीन्द्रनाथ ने इस शर्त पर भूख हड़ताल शुरू की कि जब तक अंग्रेज उनकी मांगे नहीं मानेंगे तब तक वे अन्न नहीं ग्रहण करेंगे। इस अटल प्रण के साथ यतीन्द्रनाथ की क्रान्तिकारी भूख हड़ताल शुरू हुई। उनके साथ अन्य क्रान्तिकारी भी भूख हड़ताल में शमिल हो गये। अंग्रेजों ने उनकी भूख हड़ताल तुड़वाने की काफी कोशिश की, लेकिन वे सफल नहीं हो सके। यतीन्द्रनाथ की हालत बिगड़ने पर भगत सिंह और अन्य क्रान्तिकारियों ने भी उनसे भूख हड़ताल खत्म करने को कहा, लेकिन वे अपने प्रण से पीछे नहीं हटे और भूख हड़ताल के ६३ वें दिन १३ सितम्बर १९२९ को २४ वर्ष की अल्प आयु में ही उनका स्वर्गवास हो गया। उन्होंने दिखा दिया कि देश की आजादी उन्हें अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यारी थी। कलकत्ता में उनके पार्थिव शरीर के अन्तिम दर्शन के लिए छः लाख लोगों की भीड़ जमा हुई।

महाविद्यालय परिवार मां भारती के इस क्रान्तिकारी सपूत के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

(डॉ0 राजेश शुक्ला)

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी